भारतीय ज्ञान परम्परा (उद्योगपर्व के परिपेक्ष में)

नाम – उषा

शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग

डी0एस0बी0 परिसर कु0वि0वि0नैनीताल।

ऊँ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवी सरस्वती चैव ततो जयमुदीरयेत्।।महाभारत 1/1

प्राचीनकाल से ही भारत देश विविध ज्ञान–विज्ञान आदि का अज्रस स्त्रोत रहा है; और समस्त विश्व इसकी ज्ञान परम्परा का लोहा मानते रहे हैं। विश्व में जब मानव जीवन जीने हेतु संघर्ष कर रहा था;तब भारत देश वेदों के द्वारा अपने चरम ज्ञान का अनुसन्धान कर रहा था।समस्त भारतीय ग्रन्थ चाहे वह धार्मिक हो, राजनैतिक हो, या दर्शन ,कला ,साहित्य से सॅबन्धित हों ,सभी सदैव मानव मूल्यों पर आधारित रहे हैं।
यही प्राचीन ग्रन्थ वर्तमान ज्ञान –विज्ञान की आधारशिला हैं,या यह कहा जा सकता है कि यही वर्तमान ज्ञान –विज्ञान प्राचीन ज्ञान का ही विकसित रूप है। भारतीय ज्ञान परम्परा सदैव '**सत्यं शिवम् सुन्दरम्** 'की परम्परा रही है। इसके सभी ग्रन्थ '**सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय** ' की भावना से ओत–प्रोत रहे हैं। सम्पूर्ण ज्ञान परम्परा का मुख्य उद्देश्य मानव के भौतिक सुख –साधन की वृद्धि की अपेक्षा उसका नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करना है। प्राचीन ज्ञान परम्परा मानव कल्याण का पुट लिए हुये है। जिसमें ज्ञान –विज्ञान तथा अनुसन्धान के साथ –साथ मानव चरित्र का विकास भी अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व है , क्योंकि बिना चरित्र
निर्माण के किसी भी ज्ञान– विज्ञान का सही दिशा में तथा सही जगह उपयोग करना नितान्त असम्भव सा प्रतीत होता है। मनुष्य का आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक ज्ञान ही उसे त्याज्य कर्म एवं करणीय कर्म में अन्तर बता पाता है, जिससे की मनुष्य अपना यर्वागीण विकास कर सर्वतोन्मुखी ज्ञान प्राप्त कर सके ।

'**ज्ञान** ' शब्द संस्कृत की '**ज्ञ' धातु** से बना है जिसका अर्थ है– जानना **, बोध करना , साक्षात् अनुभव अथवा प्रकाश।** सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि किसी वस्तु अथवा विषय के स्वरूप का वैसा ही अनुभव करना जैसा वह है, पूर्ण ज्ञान कहलाता है। दूसरे शब्दों में निरपेक्ष सत्य की स्वानुभूति ही ज्ञान है। चेतन अवस्थाओं में इन्द्रियों आदि के द्वारा बाहरी वस्तुओं , विषयों आदि का मन को होने वाला परिचय या बोध । मन में होने वाली वह धरणाया भावना जो चीजों या बातों को देखने , सुनने, समझने आदि से होती है ज्ञान कहलाती है। लोकव्यवहार में शरीर की वह चेतना शक्ति जिसके द्वारा जीवों ,प्राणियों आदि को अपनी आवश्यकताओं और स्थितियों के अनुसार अनेक प्रकार की अनुभूतिया औरसब बातों का परिचय होता है, वह आत्मसाक्षात्कार या ज्ञान कहलाता है। न्यायदर्शन ने '**ज्ञानं भवति बहुविधम्**'। कहकर ज्ञान के विविध रूपों की चर्चा की है। न्यायदर्शन के अनुसार यह ज्ञान 'प्रमा' तथा अप्रमा के भेद से दो प्रकार का होता है।
यथार्थ ज्ञानं प्रमा इम्युच्यते , अयर्थाथज्ञानम् अप्रमा इत्युच्यते। और इस ज्ञान की प्राप्ति का आधार प्रमाण हैं। वस्तुओं की वास्तविक अनुभूति ज्ञान है। अब प्रश्न उठता है कि क्या ज्ञान को बुद्धि भी कहा जा सकता है ? हां ज्ञान को बुद्धि भी कहा जा सकता है , क्योंकि बुद्धि रूपी प्रकाश के द्वारा ही अज्ञान रूपी अन्धकार दूर होते हैं। इसलिए न्यायदर्शन ने बुद्धि को परिभाषित करते हुये कहा है कि **– अज्ञानान्धकार–तिरस्कार–कारक–सकल पदार्थस्य अर्थप्रकाशकः प्रदीप इव देदीप्यमानः आत्माश्रयो यः प्रकाश : सा बुद्धि।।** ज्ञान एक बौद्धिक अनुभव है , जो हमें ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्त या ग्रहण करने के लिए विचार , चिंतन ,मनन , मंथन और अनुभव की शक्ति की आवश्यकता होती है।

शंकराचार्य के अनुसार – ब्रह्म को सत्य जानना ही ज्ञान है और वस्तु जगत को सत्य जानना अज्ञान। बौद्ध दर्शन के अनुसार – जो मनुष्य को सांसारिक दुःखों से छुटकारा दिलाए वो ज्ञान है।

अमरकोश के अनुसार – मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयो । अर्थात् मोक्ष में , शिल्पादि शास्त्रों में जो बुद्धि की प्रवीणता है वही ज्ञान है और जो इसके विपरीत है वही अज्ञान है । जैन दर्शन के अनुसार – यथावस्थिततत्त्वानां संक्षेपाद्विस्तरेण वा ।

योऽवबोधस्तमत्राहुः सम्यग्ज्ञानं मनीषिणः।।

ज्ञान को परिभाषित करना वैसे तो अत्यन्त दुष्कर कार्य है फिर भी भारतीय ग्रन्थों में इसे विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। जहाँ **तैत्तिरीयोपनिषद् सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म** कता है वही **बृहदारण्यकोपनिषद् विज्ञानमानन्दं ब्रह्म** कहकर इसका सम्बन्ध सीधे ब्रह्म से जोड़ देता है।भारतीय ग्रन्थ न केवल प्राचीनकाल के ज्ञान के स्त्रोत हैं अपितु इनमें वर्णित ज्ञान वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासांगिक एवं महत्त्वपूर्ण है। इसी ज्ञान को अपने में समाहित किये हुये रामायण और महाभारत आज भी ज्ञान के मुख्य स्त्रोत बने हुये हैं। महाभारत का **उद्योगपर्व** विविध ज्ञान –विज्ञान , धर्म , दर्शन , अर्थशास्त्र , आयुध विज्ञान , औषध विज्ञान आदि के साथ –साथ मानव के आध्यात्मिक ज्ञान व व्यवहारिक ज्ञान का भी मुख्य

स्त्रोत है। इसमें वर्णित ज्ञान के माध्यम से मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। उद्योगपर्व में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनसे हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि यहाँ वर्णित ज्ञान आज भी मनुष्य के लिये उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना की उस समय रहा होगा । इसके राजनीति विषयक सिद्धान्तों को आज भी प्रमाण माना जाता है। इसमें वर्णित राज्य के अंग– प्रत्यंग , राज्य का प्रशासनिक व्यवस्था , राजा के गुण – अवगुण , राजा के कर्त्तव्य , मन्त्री के आवश्यक गुण एवं उनकी आवश्यकता , दूतों की आवश्यकता एवं उनकी नियुक्ति हेतु आवश्यक योग्यता ,राजा का

कार्यकारिणीय मण्डल ,तत्त्कालीन विदेश नीति आदि से आज के राजनेताओं को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि एक राजा का प्रमुख कर्त्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा तथा उसका उत्तम प्रकार से पालन – पोषण करना है। न कि अब तो मुझे राज्य प्राप्त हो गया है यह जानकर प्रजा के साथ अनुचित व्यवहार करें । **न राज्यं प्राप्तमित्येव वर्तितव्यमसाम्प्रतम्। श्रियं ह्यविनयो हन्ति जरा रूपमिवोत्तमम्।।उ0प0 3/34/12**

शासक का कार्य अपनी जनता की रक्षा करना होता है। शासक को अपनी जनता की रक्षा उसी प्रकार करनी चाहिए जिस प्रकार माली अपने बगीचे से एक –एक फूल तोड़ता है उनकी जड़ों को नहीं काटता क्योंकि जड़ों को काटने से वृक्ष सूख जाते हैं,उसी प्रकार अत्यधिक कष्ट प्रदान करने से प्रजाजन दुःख से भर जाते हैं और उस शासक के प्रति घृणा और द्वेष शासक के प्रति घृणा और द्वेष का अनुभव करते हुए उसका त्याग कर देते हैं।वर्तमान में जहाँ वैश्वीकरण की भावना बढ़ी है , वहीं देशों में सीमा विस्तार एवं प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है। हर देश दूसरे देश पर अपना आधिपत्य जमाने को प्रयासरत है और इसके लिए वह अपने देश की आन्तरिक सुरक्षा को भी पजरअन्दाज कर रहे हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों ने देश की आन्तरिक सुरक्षा के महत्त्व को समझते हुए हमेशा स्वराष्ट्र रक्षा का उपदेश दिया है

य एवं यत्नः क्रियते परराष्ट्रार्मदने।

स एव यत्नः कर्त्तव्यः स्वराष्ट्रपरिपलने ।। उ0प0 3/34/28

उद्योगपर्व का आयुध विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान वर्तमान अस्त्र – शस्त्र निर्माण के सिद्धान्तों का प्रारम्भिक रूप माना जा सकता है ।तत्त्कालीन लोगों को दिव्यास्त्रों का ज्ञान होना असका प्रत्यक्ष प्रमाण है , युद्धादि में विस्फोटकों का प्रयोग करना उस समय के विकसित ज्ञान को प्रदर्शित करता है ।जो वर्तमान के अस्त्र – शस्त्रों से काफी मिलते –जुलते से प्रतीत होते हैं। उद्योगपर्व में ऐसे अस्त्र – षस्त्रों का वर्णन देखने को मिलता है जो अपने लक्ष्य का भ्ज्ञेदन कर पुनः अपने स्वामी के हाथों में लौट आते थे। **अक्षयाणि किलैतानि विवर्तन्ते स्म मातले । अनुभावप्रयुक्तानि सुरैरवजितानि ह ।। उ0प0 भग0प0 96/16**

इसके साथ ही उद्योगपर्व में येसे भी अस्त्र– शस्त्रों का भी प्रयोग देखने को मिलता है जो एक ही समय में अनेक लक्ष्यों का भेदन एक साथ कर सकते थे।

तेषामक्षीणि कर्णाश्च नस्तकांश्चैव मायया। निमित्तवेधी स मुनिरिषीकाभिः समर्पयत्।। उ0प0 6/94/29

जिस प्रकार वर्तमान समय में अनेक लक्ष्यों का भेदन करने वाले अस्त्रों का निर्माण किया जा रहा है उसे देखते हुए हम कह सकते हैं कि कहीं नकहीं इन अस्त्र – शस्त्रों का निर्माण प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर ी किया जाना सम्भव हो सका है। इसमें ऐसे अस्त्र –शस्त्रों का वर्णन भी देखने को मिलता है जो वर्तमान के जैविक हथियारों से काफी मेल खाते से प्रतीत होते हैं। जिनका प्रयोग एक –दूसरे को परास्त करने के लिए किया जाता है और जिनके प्रयोग करने से मनुष्य या तो मृत्यु को प्राप्त होते हैं या फिर अजीबो – गरीब सी हरकतें करने लगते हैं। या फिर उछलने , कूदने , छींकने , रोने या हंसने लगते हैं। एक प्रकार से देखा जाये तो यह अस्त्र वर्तमान की **क्लोरोफिक्रिन/नाइट्रस ऑक्साइड** से साम्य रखते हैं।

काकुदीकं शुकं नाकमक्षिसंतर्जनं तथा।
संतानं नर्तनं घोरमास्यमोदकष्टमम्।।
स्वपन्ते चप्लवन्ते च छर्दयन्ति च मानवाः।
मूत्रयन्ते च सततं रूदन्ति च हसन्ति च।। उ0प0 95/38–40

उद्योगपर्व में विभिन्न प्रंकार कीरासायनिक अभिक्रिया वाले विस्फोटकों का भी वर्णन मिलता है ,
जिनको हम वर्तमान के परमाणु बम या रॉकेट साइन्स का प्रारम्भिक आधार मान सकते हैं। इन अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग उस समय युद्धादि में किया जाता था । भुमि से भुमि में मारक क्षमता वाले अस्त्र , वायु से वायु में मारक क्षमता वाले अस्त्र , भूमि से वायु में मारक क्षमता वाले अस्त्र – शस्त्रों का ज्ञान उस समय विद्यमान था।

घातक से घातक अस्त्र – शस्त्रों का ज्ञान होने पर भी उस समय लोग इनका प्रयोग मानव कल्याण एवं स्वराष्ट्र रक्षा हेतु ही किया करते थे। विनाश के लिए नहीं। इसका स्पष्ट प्रमाण देते हुए कही गया है कि –

'स्वयं देवराज इन्द्र ने लुटेरों का वध करने तथा परपीडन करो वाले व्यक्तियों को दण्ड देने तथा युद्ध का अवसर उपस्थित होने पर स्वराश्ट्र रक्षा हेतु कवच, अस्त्र–शस्त्र और धनुष का आविष्कार किया है। 'उत्रप0 3/2

उद्योगपर्व के अध्ययन से न केवल आयुध विज्ञान अपितु चिकित्सा विज्ञान व खगोलशास्त्रीय ज्ञान व ब्रह्माण्ड का उत्पत्ति विषयक ज्ञान भी लोगों के पास विद्यमान था यह ज्ञान होता है। उस समय की चिकित्सा पद्धति वर्तमान चिकित्सा पद्धति जितनी विकसित भले ही न हो परन्तु जैसा औषध ज्ञान तत्कालीन मनुष्य को था वह उस समय की विसित ज्ञान परम्परा को प्रदर्शित करता है। युद्धादि में घायल सैनिकों के घावों को

शीघ्रतापूर्वक भरने के लिए तेल व घी में भिगोयें हुये रेशमादि वस्त्रों की भस्मादि का प्रयोग उस समय की उन्नत चिकित्सा i)ति को दर्शाता है। **सकुठाराः सकुद्दलाः सतैलक्षौमसर्पिष :।।उ0प0 अभि0प0152/7** तत्कालीन खगोलशास्त्रीय ज्ञान अपने आप में अद्भुत् है। किसी नक्षत्र का सूर्यमण्डल की परिक्रमा करने का सिद्धान्त जो आज के विद्वान देते हैं, वह भारतीय ज्ञान का आधार स्त्रोत रहा है। किसी नक्षत्र द्वारा एक समय विशेष में सूर्य की कक्षा में परिक्रमा करना एवं समयावधि पूर्ण हो जाने पर स्वतः सूर्य की कक्षा से बाहर चले जाने का ज्ञान उस समय लोगों को था। आज मनुष्य के पास विभिन्न प्रकार के उपकरण विद्यमान हैं जिनके द्वारा वह प्रत्येक खगोलीय घटना पर दृष्टि रख सकते हैं ,परन्तु अल्प संसाधनों के साथ केवल अपने अमूर्त चिन्तन द्वारा खगोलीय घटनाओं का वर्णन अपने आप में विकसित ज्ञान परम्परा का रूप है।

अत्र ज्योतिषि सर्वाणि विशन्त्यादित्यमण्डलम्।
अष्टाविंशतिरात्रं च चङ्क्रम्य सह भानुना।
निष्पतन्ति पुनः सूर्यात्सोमसंयोगयोगतः।। उ0प0 6/108/15

वर्तमान में '**जॉन लेमनटियर**' द्वारा प्रतिपादित **'बिग बैंक सिद्धान्त'** द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति विषयक ज्ञान भी भारतीय ज्ञान परम्परा की विश्व को देन है । भारतीय ग्रन्थों में सृष्टि के उत्पत्ति विषयक अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण एक पिण्ड द्वारा हुआ है और अपने प्रलयकाल में यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस पिण्ड में ही समाहित हो जायेगा।

अण्डमेतज्जले न्यस्तं दीप्यमाननिव श्रिया

आ प्रजानां ..... कश्चनः।

अतः किल महानग्निरन्तकाले समुत्थितः।

घक्ष्यते मातले सर्व त्रैलोक्यं सचराचरम्।। उ0प0 6/97/17–19

प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में वर्णित अर्थशास्त्र सम्बन्धी विचारों का आधार सदैव जनकल्याण रा है।उद्योगपर्व का प्रजागरपर्व तत्कालीन अर्थव्यवस्था रप प्रकाश डालता है , जो न केवल उस समय उपयोगी थे बल्कि जिनका वर्तमान समय में भी उतना ही महत्त्व है । तम्कालीन कर व्यवस्था वर्तमान की कर व्यवस्था का आधार मानी जा सकती है। राजा के लिए का निर्धारण हेतु कहा गया है कि राजा को अपनी प्रजा से उतना ी कर लेना चाहिए जितना की वह बिना कष्ट के अदा कर सकें ओर इसके लिए वह भौंरे और मधु का दृष्टान्त देते हैं कि जिस प्रकार भौंरा फूलों को नुकसान पहुँचाये बिना उनसे मधु प्राप्त करता हैवैसे ी राजा को भी अपनी प्रजा से कर लेना चाहिए।

यथामधुसमादत्ते रक्षन्पुष्पाणि षटपदः।

त्द्वदर्थान्मनुष्येभ्य आदद्यादविसिया।।उ0प0 4/34/17

वर्तमान समय में शासक वर्ग को इससे शिक्षा ग्रहण करते हुये जनता रप उतना कर लगाना चाहिए जितना कि जनता आसानी से अदा करे और कोई भी कर चोरी जैसे कार्य न के। उद्योगपर्व वैसे तो किकिध ज्ञान का अक्षय भण्डार है परन्तु इसका अन्तिम लक्ष्य ज्ञान और मोक्ष का प्राप्ति है। भारतीय ग्रन्थों में मोक्ष की प्राप्ति का आधार सदैव ज्ञान ही रहा है। ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है और ज्ञान ी मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है।इसलिए मनुष्य को सदैव ज्ञान का आश्रय लेने की बात कही गयी है।

अनैभृत्येन वै तस्य दीक्षितव्रतमाचरेत्।

नामैतद्धातुनिर्वृतं सत्यमेव सतां परम्।ज्ञानं वै नाम प्रत्यक्षं परोक्षं जायते तपः।।

अन्तवन्तः क्षत्रिय ते जयन्ति लोकांजनाः कर्मणा निर्मितेन।

ब्रह्मैव विद्वांस्तेन अभ्येति सर्व नान्यः पन्थाः अयनाय विद्यते।। उ0प04/44/17

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय ग्रन्थ ही ज्ञान का वह स्त्रोत हैं व आधार हैं जिनके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव है। जो वर्तमान में मनुष्य के उतरोत्तर होते नैतिक पतन को रोक सकता है तथा प्रत्येक मनुष्य के अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना कर उसे इसलोक तथा परलोक में प्रतिष्ठा प्रदान कर सकता है। तथा जनसामान्य में **'सर्वे भवन्तु सुखिनः '** की भावना का विकास कर सकता है। जिससे मनुष्य प्रगति पथ पर अग्रसर होने के साथ –साथ उत्तम नैतिक मूल्यों ,उदात्त चरित्र , एवं उच्च आध्यात्मिकता के स्तर को भी प्राप्त कर सके ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1- महाभारत,उद्योगपर्व, डा0 पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी बलसाड, प्रथम संस्करण – 1969

2- संक्षिप्त महाभारत , जयदयाल गोदयन्का , गीता प्रेस गोरखपुर , 41 वां संस्करण संवत् 2061 पृष्ठ संख्या –447

3- विदुरनीति , सत्यकेतु प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2013 पृष्ठ संख्या – 85

4- न्यू पैटर्न दिग्दर्शिका , चित्रा त्रिपाठी , चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी , तृतीय संस्करण 2015

5- नीतिशतकम् , डा0 कुमुद टंडन , ईस्टन बुक लिंकर दिल्ली 1990

6- महाभारत एक उपजीव्य ,ज्ञान प्रकाश मिश्र

7- उपकार यू0जी0 सी0 सेस्कृत द्वितीय प्रश्न पत्र , डा0 मिथिलेश पाण्डेय उपकार प्रकाश्न 2018

8- www.Mahabharata.org.com – pdf page no. 47

9- Hhttp.wikipidiea .org .com

10- https;//yanveda.in

11- http;//www.shikshavichar.com

12- ज्ञान विकिपीडिया http://hi.